The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 3 | October 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

तलाक पर वैश्वीकरण का प्रभाव, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन : बालको नगर के विशेष संदर्भ पर

डॉ0 विमला सिंह

सहायक प्रध्यापक (समाजशास्त्र)

कमला नेहरू महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
वैश्वीकरण, अवैध प्रेम संबंध, अनुलोम विवाह, प्रेम विवाह

ABSTRACT

प्राचीन काल से ही विवाह हमारे समाज में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व पवित्र धार्मिक संस्कार माना जाता रहा है हर पुरुष और महिला के जीवन का एक हिस्सा है। आज के वैश्वीकरण के युग जहां हर जगह परिवर्तन देखा जा रहा है इसका प्रभाव पति–पत्नी के रिश्ते पर भी पड़ रहा है आज का युवा प्रेम विवाह, अन्तजातीय विवाह, अनुलोम विवाह, विलंब विवाह, लिव इन रिलेशनशिप, अवैध प्रेम संबंध, महिलाओं के द्वारा नौकरियों को अधिक महत्व देना, हमारा जीवन हमारी मर्जी जैसे सोच ने परिवार एवं विवाह के परंपरागत प्रतिमानों को चुनौती मिल रही है जिसका परिणाम अंत में तलाक के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं हमारे विकासशील भारत देश में यह समस्या लगातार बढ़ रही है जो एक चिंता का विषय बन गई है जिससे सुधारा जाना अति आवश्यक है व समय की मांग बन चुकी है।

इंसान आखिर विवाह क्यों करता है? क्योंकि हर व्यक्ति को एक साथी की जरूरत होती है जो मानसिक तौर पर, भावनात्मक रूप से, आर्थिक स्थिति में और कठिन परिस्थितियों में उसके साथ खड़ा रह सके। समाज शादी को इसलिए ज्यादा महत्व देता है ताकि बेटियों को एक सम्मानजनक जीवन प्राप्त हो। तब शादी लड़कियों के लिए जी का जंजाल बन जाए तो इस शादी के बंधन से वह

*Corresponding Author

बाहर निकलना ही उचित समझती है यह अफसोस की बात है की शादी टूटने के पीछे लड़कियां हमेशा दोषी हो या ना हो कारण लड़कियों को माना जाता है।

तलाक शब्द शादीशुदा जिंदगी के ऊपर लगा एक ऐसा दाग होता है जिसे तलाक लेने वाला भूलना भी चाहे तो समाज उसे भूलने नहीं देता है लोगों के तरह–तरह के सवाल आपके फैसले पर और आप पर जलते अंगारों की तरह पड़ते रहते हैं। 'अब क्या करोगी?' 'शादी जैसी भी हो पति कैसा भी हो तलाक नहीं लेना चाहिए था' 'लड़की हो' अकेले कैसे गुजारा करोगी, जैसे तमाम सवाल तलाकशुदा को जीने नहीं देते है।

वैषवीकरण के प्रभाव से आज हमारा परिवार, विवाह, रिश्तें भी नहीं बच पाए हैं पहले जब बेटी शादी के बाद विदा होकर ससुराल जाती थी तो माता–पिता यह कह कर भेजते थे कि बेटी डोली में जा रही हो तो, अर्थी में ही विदा होना, इसका तात्पर्य यह था कि विवाह के बाद पति–पत्नी में जो भी आपसी तनाव उत्पन्न हो जाए तो उसे आपस में ही समझौता कर लेना ससुराल से गुस्सा होकर लड़ाई करके छोड़कर नहीं आना। सुख व दुख जीवन का हिस्सा है कभी परेशान होकर इस पवित्र रिश्ते को जिसे ईश्वर ने बनाया है, इस रिश्ते को तोड़ने की कोशिश न करना पर आज के समय में सोच ही बदल गई है आज विदा करते समय माता–पिता स्वयं बोलते हैं कि अगर कोई भी समस्या हो तो तुरंत हमें फोन करना हम तुम्हें लेने आ जाएंगे तुम इतनी पढ़ी–लिखी हो आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो तथा इसकी शिकायत हम पुलिस विभाग में करेंगे, इसका बहुत बुरा प्रभाव पति–पत्नी के रिश्ते पर पड़ता है जो तलाक तक पहुंच जाता है।

आधुनिक समय में तलाक लेने के कारण महिलाओं और पुरुषों दोनों की ही जिम्मेदारियों को बढ़ा देता है। तलाक की स्थिति का मूल्यांकन बहुत संज्ञानात्मक बन गया है, तलाक के बाद न जाने क्यों लोगों के मन में अपने आप में खेद, निराशा और सहानुभूति आ जाती है जो महिला और पुरुष तलाक के दर्द को झेल चुके हैं उन्हें अफसोस होता है कि काश समझदारी से सोचा होता तो आज हमारा परिवार टूटता नहीं बच्चे साथ होते, बच्चों को माता–पिता दोनों का प्यार मिल पाता, जो तलाकशुदा होते हैं वह कभी दूसरे को तलाक लेने की सलाह नहीं देते हैं तलाक के बाद एक नहीं जिंदगी की शुरुआत करना बहुत कठिन होता है।

अध्ययन विश्लेषण

प्रस्तुत शोधपत्र ''तलाक पर वैश्वीकरण का प्रभाव, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' विषय से संबंधित संकलित तथ्यों के विश्लेषण पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र कोरबा जिले (छत्तीसगढ़) के बालको नगर में निवासरत तलाकषुदा पुरुष व महिलाओं को अध्ययन में लिया गया है। अध्ययन के लिए 50 तलाकषुदा पुरुष व महिलाओं का चुनाव उद्देश्य पूर्ण निर्देशन के द्वारा किया गया है। तलाक एक गंभीर सामाजिक समस्या, अध्ययन के अंतर्गत तलाक की जिम्मेदार कारण, तलाक के प्रभाव तथा समस्या का समाधान आदि का सर्वेक्षण कर प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. तलाक लेने का निर्णय सही था या नहीं ।
2. तलाक के प्रमुख कारणों का अध्ययन करना ।
3. तलाक के कारण पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।
4. तलाक को रोकने के उपाय का अध्ययन करना ।
5. तलाक होने के कारण मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है या नहीं, इसका अध्ययन करना ।

तलाक लेने का निर्णय सही था या नहीं –

वास्तव में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से तलाक के कारणों का परस्पर जुड़ा होना स्वाभाविक ही है **इलियट तथा मैरिल** के अनुसार ''तलाक के वास्तविक कारण वे तनाव तथा उत्तेजनाएं हैं जिनमें की पुरुष तथा स्त्री को वैवाहिक बन्धनों को बनाए रखना कठिन होता है।''1

तालिका क्रमांक – 1

तलाक लेने का निर्णय

क्रमांक	निर्णय	आवृत्ती	प्रतिषत
1.	सही था	15	30
2.	गलत था	35	70
	कुल योग	50	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 70 प्रतिषत उत्तरदाता यह मानते हैं कि उनका तलाक लेने का निर्णय गलत था क्योंकि वह गुस्से में आकर व सबक सिखाने का सोचकर तलाक ले लिए थे, जबकि 30 प्रतिषत उत्तरदाता तलाक लेने का निर्णय सही मानते हैं।

तलाक के प्रमुख कारण –

जब कोई समस्या अपने गंभीर रूप में आ जाती है तो उसके लिए कोई एक कारण जिम्मेदार नहीं होता अनेक कारणों का परिणाम होता है। ''प्रेम विवाहों के संबंध में बतायी गई संभाविक समस्याओं के उपरांत भी लोग प्रेम विवाह करते हैं विवाह का आधार केवल प्रेम नहीं होता है। बहुत से विवाह प्रेम के आवेश में वे विवाह तो कर लेते हैं, परंतु बाद में जीवन की कटु शक्तियों का सामना करने में असफल पति –पत्नी तलाक का सहारा लेते हैं।'' 2

जब दोनों में यह आषंका उत्पन्न हो जाती है कि वह ईश्वरीय सीमा के अंदर नहीं रह सकते, तलाक वह स्थिति है जो कानून– सम्मत तो है, किंतु ईश्वर उसे पसंद नहीं करता है।'' 3

तालिका क्रमांक 3

तलाक के कारण

क्र.	कारण	आवृत्ति	प्रतिषत
1.	आर्थिक निर्भरता	4	8
2.	नैतिक मूल्यों का ह्रास	10	20
3.	अंह का होना	5	10
4.	सहनषीलता की कमी	4	8
5.	अभिभावक का अत्यधिक हस्ताक्षेप होना	6	12
6.	पति–पत्नि दोनों का नौकरीपेषा होना	3	6
7.	अवैध सम्बन्ध	7	14
8.	नपुंसकता व बांझपन	2	4
9.	मानसिक कमजोरी	1	2
10.	उत्तेजनात्मक प्रकृति	8	16
	कुल योग	50	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 20 प्रतिषत उत्तरदाता मानते हैं कि आज के आधुनिक जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास होना ही सबसे बड़ा कारण है, 16 प्रतिशत उत्तरदाता उत्तेजनात्मक प्रकृति का होना, 14 प्रतिशत उत्तरदाता अवैध संबंधों का होना, 12 प्रतिषत उत्तरदाता अभिभावकों का अत्यधिक हस्ताक्षेप होना, 10 प्रतिषत उत्तरदाता अंह का होना, 8 प्रतिषत उत्तरदाता सहनशीलता की कमी एवं 8 प्रतिषत उत्तरदाता आर्थिक निर्भरता, 6 प्रतिषत उत्तरदाता पति–पत्नी दोनों का नौकरीपेषा होना, 4 प्रतिशत उत्तरदाता नपुंसकता व बांझपन का होना, 2 प्रतिशत उत्तरदाता मानसिक कमजोरी का होना मानते हैं।

तलाक के कारण होने वाले प्रभाव–

तलाक का सबसे बुरा प्रभाव बच्चों पर ही पड़ता है अकसर देखा गया है कि तलाक द्वारा नष्ट हुए परिवार के बच्चे बाल अपराधी बन जाते हैं।

डेविस ने अपने अध्ययन में पाया है ''कि एकांकी परिवार में तलाक संयुक्त परिवार में तलाक से अधिक गंभीर समस्या है एकांकी परिवार में तलाक बच्चों के लिए असामान्य पारिवारिक परिस्थितियों पैदा कर देता है, कुछ बच्चे विवाह के प्रति ही उदासीन हो जाते हैं तथा आजीवन विवाह न करने की भावना विकसित कर लेते हैं। तलाक के बाद स्त्री के लिए पुनर्विवाह करना भी कठिन हो जाता है।'' 4

तालिका क्रमांक 4

तलाक के प्रभाव

क्रमांक	प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिषत
1.	बच्चों पर प्रभाव	16	32
2.	समाज पर प्रभाव	11	22
3.	पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव	08	16
4.	पति–पत्नि दोनों पर प्रभाव	05	10
5.	वेष्यावृत्ति में वृद्वि	06	12
6.	अपराध के दर में वृद्वि	04	8
	कुल योग	50	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 32 प्रतिषत उत्तरदाता यह मानते हैं कि तलाक का सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता है क्योंकि बच्चे पति या पत्नी दोनों में से किसी एक के पास ही रहता है अधिकतर मां के पास रहता, पर पिता का प्यार व अपनापन नहीं मिल पाता है, 22 प्रतिषत उत्तरदाता समाज पर बुरा प्रभाव मानते हैं, 16 प्रतिषत उत्तरदाता पारिवारिक संबंधों पर, 12 प्रतिषत उत्तरदाता वेश्यावृत्ति में वृद्धि, 10 प्रतिषत उत्तरदाता पति–पत्नी दोनों पर प्रभाव, 8 प्रतिशत उत्तरदाता अपराध के दर में वृद्धि मानते हैं।

तलाक को रोकने के उपाय –

किसी भी परिवार के लिए तलाक एक दुखद परिणाम ही है क्योंकि तलाक के बाद परिवार के सभी सदस्यों में मानसिक तनाव व अकेलापन महसुस करते हैं।

तालिका क्रमांक – 5

तलाक को रोकने के उपाय

क्रमांक	उपाय	आवृत्ति	प्रतिषत
1.	पारिवारिक समायोजन	08	16
2.	नैतिक मूल्यों पर बल	11	22
3.	सादा जीवन उच्च विचार	05	10
4.	अष्लील साहित्य व फिल्मों पर नियंत्रण	07	14
5.	उचित काउसलिंग द्वारा	10	20

6.	आपसी समझौता	09	18
	कुल योग	50	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 22 प्रतिषत उत्तरदाता का मानना है कि तलाक की समस्या को रोकने के लिए नैतिक मूल्यों पर बल देना चाहिए, 20 प्रतिषत उत्तरदाता उचित काउंसलिंग द्वारा, 18 प्रतिषत उत्तरदाता आपसी समझौता, 16 प्रतिषत उत्तरदाता पारिवारिक समायोजन, 14 प्रतिशत उत्तरदाता अश्लील साहित्य व फिल्मों पर नियंत्रण, 10 प्रतिषत उत्तरदाता सादा जीवन उच्च विचार को मानते हैं।

तलाक होने के कारण मानसिक समस्याओं का सामना करना –

तलाक के कारण जीवन में उसके नकारात्मक प्रभाव तो पड़ते ही है पर कुछ स्थिति में तलाक के सकारात्मक प्रभाव भी पड़ता

है। भारत एक विकासशील देश है यहां पर तलाक की दर में वृद्धि से कई सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व मानसिक समस्याओं का जन्म होता ही है।

जब उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि तलाक होने के कारण मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ा, तो सभी उत्तरदाता यह मानते हैं कि उन्हें मानसिक तनाव से गुजरना पड़ा है।

वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण तलाक के परिणाम तलाकषुदा पुरुष तथा स्त्री दोनों के लिए अच्छे नहीं होते हैं यद्यपि दुखी वैवाहिक जीवन से तलाक द्वारा मुक्ति तो उन्हें प्राप्त हो ही जाता है, पर इसके सकारात्मक परिणाम की अपेक्षा नकारात्मक परिणाम अधिक आते हैं। वास्तव में तलाक व्यक्तित्व पारिवारिक तथा सामाजिक विघटन लाता है तथा इसके प्रभाव पुरुषों की अपेक्षा बच्चों व पत्नी पर अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। तलाक से निराशा, हीनता की भावना, शर्म, अकेलापन, आर्थिक कठिनाइयां, स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता ही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. महाजन संजीव, भारत में समाजिक विघटन, अर्जुन पब्लिकेषन हाउस, पृ. 205 सन् 2007.
2. मदन जी.आर., ''भारतीय सामाजिक समस्ययएं, विवेक प्रकाषन, पृ. –360, सन 1984.
3- मुखर्जी रवीन्द्रनाथ एवं अग्रवाल भरत, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, विवेक प्रकाषन, पृ. 242, सन 2005.
4- महाजन धर्मवीर एवं महाजन कमलेष, नातेदारी, विवाह एवं परिवार का समाजषास्त्र, विवेक प्रकाषन, पृ. –159, सन 2005.